

सोनित पुं. (देश.) शोणित, रक्त।

सौतिक पुं. (तत्.) सीप, शक्ति।

सौन पुं. (देश.) श्रवणोद्रिय, कर्ण, कान।

स्लिप स्त्री. (अं.) 1. फिसलन 2. कागज की छज्जी/पर्ची, चिट।

स्लीपर पुं. (अं.) 1. एक प्रकार की जूती, जो एड़ी की ओर से खुली होती हैं, चट्टी 2. बड़ी धरन 3. रेलगाड़ियों में वह डिब्बा जिसमें से यात्रियों के सोने के लिए जगह आरक्षित होती है।

स्लेज स्त्री. (अं.) एक प्रकार की बिना पहिए की गाड़ी, जो बर्फ पर घसीटती हुई चलती है।

स्लेट स्त्री. (अं.) लोहे की चट्टर या काले पत्थर की बनी हुई, चौरस पतली पटरी, जिस पर बच्चे चाक आदि से लिखते हैं 2. उक्त प्रकार की लोहे की पतली चादर की बनी पट्टी।

स्लैब पुं. (अं.) पत्थर, धातु आदि का वर्गाकार आयताकार समतल टुकड़ा, पटिया।

स्लो वि. (अं.) 1. मंद गति वाला, सुस्त 2. वास्तविक समय से पीछे या पिछड़ा हुआ।

स्वंग पुं. (तत्.) आलिंगन।

स्वंगन पुं. (तत्.) आलिंगन करना, गले लगाना।

स्वः पुं. (तत्.) 1. अपनापन, आत्मत्व, निजत्वा 2. भाई-बंधु, गोती 3. स्वर्ग 4. विवाद 5. धन संपत्ति 6. विष्णु का एक नाम वि. अपना, निज का।

स्वःपथ पुं. (तत्.) (स्वर्ग का मार्ग) मृत्यु।

स्वःसरित स्त्री. (तत्.) गंगा।

स्वःसुंदरी स्त्री. (तत्.) अप्सरा।

स्व वि. (तत्.) 1. अपना, निजी 2. स्वाभाविक 3. अपने परिवार, जाति, वर्ग या राष्ट्र आदि का 4. अपने आप होने वाला पुं. 1. जीवात्मा, आत्मा जैसे- स्व की ईश्वर भक्ति 2. आत्मीय जन, संबंधी, नातेदार, रिश्तेदार 3. एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगाकर 'ता', 'त्व' आदि की भाँति भाव-वाचकता जैसे- निजस्व, परस्व।

स्व अर्जित वि. (तत्.) जिसका अर्जन/प्राप्ति किसी ने स्वयं की हो, अपने द्वारा अर्जित या कमाया हुआ, स्वार्जित।

स्वकंपन पुं. (तत्.) वायु, हवा।

स्वक वि. (तत्.) अपना, निजी पुं. 1. अपनी संपत्ति 2. स्वजन।

स्वकयुग्मन पुं. (तत्.) वनस्पति. पुष्प का निषेचन अपने ही परागकणों से होने की अवस्था।

स्वकर पुं. (तत्.) अपना हाथ।

स्वकरण पुं. (तत्.) किसी चीज पर अपना स्वत्व जताना, दावा करना।

स्वकरणभाव पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु पर बिना अपना स्वत्व सिद्ध किए अधिकार करना, बिना हक साबित किए कब्जा करना।

स्वकर्म पुं. (तत्.) 1. अपना काम 2. अपना कर्तव्य और धर्म।

स्वकर्मी वि. (तत्.) 1. अपना काम करने वाला 2. अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करने वाला 3. स्वार्थी।

स्वकशाघात पुं. (तत्.) 1. स्वयं को कोड़े मारना 2. अपने आपको शारीरिक अथवा मानसिक यातना देना 3. धार्मिक तप के अंतर्गत स्वयं पर चाबुक आदि का प्रयोग करना या करवाना।

स्वकीय वि. (तत्.) 1. अपना, निजी 2. अपने परिवार, समाज, वर्ग, देश आदि का पुं. 1. अपने लोग, आत्मीय जन 2. संबंधी, रिश्तेदार 3. मित्र।

स्वकीया वि. (तत्.) काव्य. (स्वकीय का स्त्रीलिंग रूप) साहित्य में वह नायिका, जो विवाहिता हो तथा अपने ही पति से अनुराग करती हो टि. स्वकीया नायिका के तीन भेद हैं- मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा/ प्रौढ़ा। बाल्यावस्था से तरुणाई में प्रवेश कर रही नायिका 'मुग्धा', कही जाती है, जिसमें लज्जा और काम भाव समान हो, वह 'मध्या' और जो काम-कला में प्रवीण हो, वह 'प्रगल्भा' या 'प्रौढ़ा' कही जाती है।